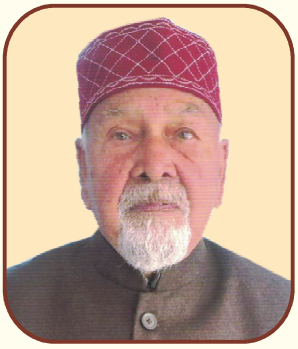

DR. YASHWANT SINGH KATHOCH

Dr. Yashwant Singh Kathoch is a well-known scholar who has accomplished a pioneering work on History, Archaeology, Art and Architecture of Central Himalayan region. Despite being 89 years old, he continues to contribute actively to his field. He is currently engaged in writing his latest work “Inscription of the central Himalayan”. The authenticity of Dr. Kathoch's work is reflected in the inclusion of his works in university syllabus and their recognition for competitive examination.

2. Born on 27th December, 1935 in the Mason Village of Pauri Garhwal district (Uttarakhand), Dr. Kathoch pursued Higher Education at Agra University, earning a Master's degree with 'First Position' honour in Ancient Indian History, Culture and Archaeology in 1974. Subsequently, he obtained his Ph.D in History and Archaeology from Garhwal University. His career began as a teacher, culminating in his retirement from state education service as Principal in 1995.

3. In the year1973, Dr. Kathoch was one of the founder members of “Uttarakhand Shodh Sansthan', a state level institute, where he served in various capacities; as vice-chairman and Director of the institute and editor of Sansthan Journal 'Uttarakhand Sanskrit for an extended period. His primary field of research was focused on History and Archaeology, Art and Architecture. Over 55 years, he has made significant contribution in this field. This is evident from his extensive works. Some notable Hindi works include Madha Himalaya Ka Puratattva, Sainya Tradition of Uttrakhand, Sanskriti Ke Pad-Chihn, Art of Central Himalaya: an architectural study, Garhwal ka Itihas, Uttrakhand Ka Naveen Itihas, E.T. Atkinson's, History of the Himalaya Districts: a critical study, Garhwali ke Pramukh Abhilekh, Yashodhara (Essays on history Culture and Archaeology) and Bharatvarshiy Aitihasik Sthalkosh.

4. Dr. Kathoch was nominated as Member by State & Central Government in the Committee on Culture and Heritage Tourism, Uttarakhand Government, Advisory Committee of Uttarakhand Archives, Cultural Department of Uttarakhand Government, Sanskriti Samvardhan Samiti, Uttarakhand Government, Regional Mission Monitoring Committee, Dehradun circle, ASI, National Mission on Monuments and Antiquities, ASI, SLIC.

5. Dr. Kathoch is recipient of various Awards and Honours viz 'Princep Award' by Hon'ble Governor (1965); by Akhil Garhwal Sabha (2002) for outstanding works in History Culture and Archaeology of Himalaya, 'Varishth Vabhuti Samman' by Sanskrit, Sahitya Evam Kala Parishad of Uttarakhand Govt. (2006), Pahar Foundation Rajat Samman (2010), Honoured by Himalayan Sahitya Evam Kata Parishad, Srinagar for excellent work in Hindi Language and Literature (2021).

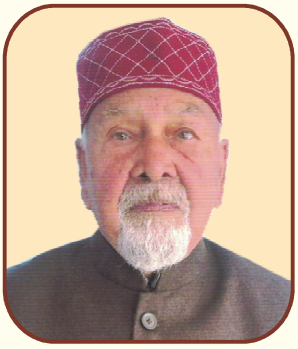

डॉ. यशवन्त सिंह कठोच

डॉ. यशवन्त सिंह कठोच एक प्रसिद्ध विद्वान हैं जिन्होंने मध्य हिमालयी क्षेत्र के इतिहास, पुरातत्व, कला और वास्तुशिल्प पर अग्रणी कार्य किया है। 89 वर्ष की उम्र होने के बावजूद वे अपने क्षेत्र में सक्रिय योगदान देते रहते हैं। वह वर्तमान में अपने नवीनतम कार्य ''मध्य हिमालय का शिलालेख'' लिखने में लगे हुए है। डॉ. कठोच के काम की प्रामाणिकता उनके कार्यों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने और प्रतियोगी परीक्षाओं में इनकी मान्यता से परिलक्षित होती हैं।

2. 27 दिसंबर 1935 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले के मैसोन गांव में जन्मे डॉ. कठोच ने आगरा विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा हासिल की और 1974 में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व में 'प्रथम स्थान' के साथ मास्टर डिग्री हासिल की। इसके बाद, उन्होंने गढ़वाल विश्वविद्यालय से इतिहास और पुरातत्व में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। उनका करियर एक शिक्षक के रूप में शुरू हुआ, और अंत में वह 1995 में राज्य शिक्षा सेवा से प्रिंसिपल के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

3. वर्ष 1973 में डॉ. कठोच "उत्तराखंड शोध संस्थान" के संस्थापक सदस्यों में से एक थे जो एक राज्य स्तरीय संस्थान है जहां उन्होंने विभिन्न पदों; संस्थान के उपाध्यक्ष और निदेशक और संस्थान के जर्नल उत्तराखंड संस्कृत के संपादक के रूप में कार्य किया। उनके अनुसंधान का प्राथमिक क्षेत्र इतिहास और पुरातत्व, कला और वास्तुकला पर केंद्रित था। 55 वर्षों से अधिक समय से उन्होंने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह उनके व्यापक कार्यों से स्पष्ट है। कुछ उल्लेखनीय हिंदी कृतियों में मध्य हिमालय का पुरातत्त्व , उत्तराखंड की सैन्य परंपरा, संस्कृति के पद चिह्न, मध्य हिमालय की कलाः एक वास्तुशिल्प अध्ययन, गढ़वाल का इतिहास, उत्तराखंड का नवीन इतिहास, ईटी एटकिंसन का हिमालय के जिलों का इतिहासः एक आलोचनात्मक अध्ययन, गढ़वाली के प्रमुख अभिलेख, यशोधरा (इतिहास संस्कृति और पुरातत्व पर निबंध) और भारतवर्षीय ऐतिहासिक स्थलकोश शामिल हैं।

4. डॉ. कठोच को राज्य और केंद्र सरकार द्वारा सदस्य के रूप में संस्कृति एवं विरासत पर्यटन समिति, उत्तराखंड सरकार, उत्तराखंड अभिलेखागार की सलाहकार समिति, उत्तराखंड सरकार के सांस्कृतिक विभाग, संस्कृति संवर्धन समिति, उत्तराखंड सरकार, क्षेत्रीय मिशन निगरानी समिति, देहरादून सर्कल, एएसआई, स्मारकों और पुरावशेषों पर राष्ट्रीय मिशन, एएसआई, एसएलआईसी में नामित किया गया था।

5. डॉ. कठोच को विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हैं, जिनमें हिमालय के इतिहास संस्कृति और पुरातत्व में उत्कृष्ट कार्यों के लिए माननीय राज्यपाल द्वारा 'प्रिंसेप पुरस्कार' (1965); अखिल गढ़वाल सभा द्वारा सम्मान (2002), संस्कृत, साहित्य एवं कला परिषद उत्तराखंड सरकार द्वारा 'वरिष्ठ विभूति सम्मान' (2006), पहाड़ फाउंडेशन रजत सम्मान (2010), हिंदी भाषा एवं साहित्य में उत्कृष्ट कार्य के लिए हिमालय साहित्य एवं कला परिषद, श्रीनगर द्वारा प्रदान किया गया सम्मान (2021) शामिल हैं।